ज्ञान मीमांसा II paper

B.A I (Hons)

बुद्धिवाद

मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु प्राणी है। वह किसी भी विषय से अनभिज्ञ नहीं रहना चाहता। जब वह विषयों का ज्ञान प्राप्त करता है तो उसका व्यक्तित्व परिपक्व हो जाता है। ज्ञान मीमांसा दर्शन की वह शाखा है जिसमें ज्ञान सम्बन्धी विषयों का विवेचन होता है, इसे प्रमाण्य विज्ञान भी कहते हैं। सभी प्रकार के ज्ञान सत्य नहीं होते। कुछ ज्ञान सत्य तथा कुछ ज्ञान मिथ्या भी होता है। दर्शन में सत्य ज्ञान को जानने के लिए ही ज्ञान-मीमांसा का सहारा लिया जाता है।

पाश्चात्य दर्शन में ज्ञानमीमांसा अथवा प्रमाण्य विज्ञान ज्ञान सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करता है। ज्ञान मीमांसा को व्यवस्थित स्थान दिलाने का श्रेय (Locke) लॉक महोदय को जाता है। मानवीय ज्ञान की परिभाषा, इसकी विधि एवं इसकी प्रामाणिकता के सम्बन्ध तीन सिद्धान्त पाये जाते हैं। बुद्धिवाद, अनुभववाद तथा समीक्षावाद। बुद्धिवाद ज्ञान को बौद्धिक मानता है तथा बुद्धि को ही एक मात्र साधन मानता है। अनुभववाद ज्ञान को अनुभवजन्य बतलाकर बुद्धि का पूर्ण बहिष्कार करता है तथा कान्ट का समीक्षावाद इन दोनों सिद्धान्तों में समन्वय लाने के उद्देश्य से

बुद्धि ही ज्ञान प्राप्ति का एक मात्र साधन है। यह ज्ञान सार्वभौम है क्योंकि यह सभी स्थान तथा सभी कालों में मान्य होता है। यह हमेशा और सभी स्थान में सत्य पाया जाता है।

बुद्धिवाद के अनुसार मानव मस्तिष्क हमेशा सक्रिय रहता है (Human mind is always active) यह विचार लॉक के मत से भिन्न है। बुद्धिवाद के अनुसार मस्तिष्क सक्रिय होकर ही प्रत्ययों को पुनर्गठित करके यथार्थ ज्ञान देता है। बुद्धिवाद का पूर्ण विकास डेकार्ट, स्पिनोजा और लाइबनीज आदि विचारकों के द्वारा हुआ। डेकार्ट के अनुसार बुद्धि द्वारा ही हमें यथार्थ और असंदिग्ध ज्ञान मिलता है। इन्द्रियानुभव पर प्राप्त ज्ञान सदा सत्य नहीं होता है।

डेकार्ट का कहना है कि बुद्धि सहज प्रत्ययों से निगमन की विधि द्वारा सार्वभौम और अनिवार्य ज्ञान मिलता है।

स्पिनोजा तीन प्रकार के ज्ञान मानते हैं (1) काल्पनिक ज्ञान (2) अनुमानजन्य ज्ञान (3) प्रातिभ ज्ञान। काल्पनिक ज्ञान को स्पिनोजा इन्द्रियजन्य मानते हैं इसके अन्तर्गत इन्द्रिय, स्मृति द्वारा प्राप्त ज्ञान आते। अनुमानजन्य ज्ञान और प्रातिभ ज्ञान बौद्धिक ज्ञान ही यथार्थ ज्ञान मानते हैं।

लाइबनीज — डेकार्ट की तरह लाइबनीज भी बौद्धिक ज्ञान को ही सत्य मानते हैं लेकिन दोनों में अन्तर है डेकार्ट कुछ प्रत्ययों को जन्मजात मानते हैं लेकिन लाइबनीज सभी प्रत्ययों को जन्मजात मानते हैं जो जन्मजात प्रत्यय हमारे मस्तिष्क में अविकसित रूप में मौजूद रहते हैं वह विकसित होते हैं तो इसके बारे में चेतना हो जाती है

Scanned with CamScanner

ज्ञान को अनुभव तथा बुद्धि का संयुक्त परिणाम घोषित करता है।

ज्ञान के सम्बन्ध में एक और प्रश्न उठता है कि क्या ज्ञान का विषय ज्ञाता से स्वतंत्र है या ज्ञाता पर निर्भर है? इसके सम्बन्ध में दो मत आते हैं (1) प्रत्ययवाद तथा (2) वस्तुवाद

ज्ञान के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि क्या ज्ञान स्वयं साधन है या साध्य। इस तर्क प्रश्न के सम्बन्ध पाश्चात्य दार्शनिकों का मत है कि ज्ञान स्वयं साध्य है ज्ञान ज्ञान के लिए प्राप्त किया जाता है यह अन्य वस्तु की सिद्धि का साधन नहीं हो सकता। लेकिन इसके सम्बन्ध में भारतीय विचारकों का मत है कि ज्ञान मोक्ष का साधन है। किसी भी ज्ञान प्रक्रिया में ज्ञाता और ज्ञेय का रहना अनिवार्य है क्या ज्ञेय ज्ञाता पर आश्रित है या उससे स्वतंत्र है? इसके सम्बन्ध में तीन सिद्धान्त बतलाये गये हैं (1) प्रत्ययवाद के अनुसार ज्ञेय का अस्तित्व ज्ञाता पर आश्रित है (2) वस्तुवाद के अनुसार ज्ञेय ज्ञाता से स्वतंत्र है (3) प्रत्ययवादी वस्तुवाद के अनुसार ज्ञेय का अस्तित्व कुछ अंश तक ज्ञाता पर है तथा कुछ अंश ज्ञाता से स्वतंत्र है यह सिद्धान्त प्रत्ययवाद और वस्तुवाद में समन्वय स्थापित करता है।

(1) बुद्धिवाद — बुद्धिवादियों के अनुसार वास्तविक और सत्य ज्ञान को प्राप्त करना एक मात्र लक्ष्य माना जाता है इस मत के अनुसार

Scanned with CamScanner